परीक्षा में सुधार की योजना

(Planning for Improvement in Examination)

डा० हिल ने माध्यमिक प्रशिक्षण विभागों के प्राध्यापकों के लिये आयोजित कार्यशाला (July 22 to 31, 1964) में मूल्यांकन प्रक्रिया में सुधार हेतु अपने विचार इस प्रकार रखे हैं—

"In the old system, examination dictated all curriculum and methodology while in the new system, both examination and instruction would be determined by specific instructional objectives. Objectives should form the basis of the whole scheme of education and evaluation. The emphasis on information in teaching and testing should shift to the application of knowledge, acquisition of skills, inculcation of attitudes and values and development of appreciations."

परीक्षा के दो पक्ष होते हैं। मापन पक्ष तथा शैक्षणिक पक्ष। परीक्षा में सुधार की दृष्टि से दोनों ही पक्षों पर ध्यान देना आवश्यक है। जहाँ तक मापन पक्ष का सम्बन्ध है, इसमें प्रयुक्त विभिन्न उपकरणों

Scanned with CamScanner

(Tools) तथा प्रविधियों (Techniques) में ऐसा सुधार लाना चाहिये जिससे यह अधिक विश्वसनीय, वैध तथा वस्तुनिष्ठ हो सके। यदि हम परीक्षा सुधार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर दृष्टि डालें तो हम देखेंगे कि परीक्षा के माध्यम से सम्पूर्ण शिक्षा पद्धति में सुधार लाने का प्रयास किया गया है। कैम्ब्रिज तथा आक्सफोर्ड विश्वविद्यालयों द्वारा परीक्षा प्रणाली का समावेश शैक्षिक सुधार तथा शिक्षा में उच्च स्तर को लाने के प्रयास के लिये 1830 के पूर्व ही किया गया था। इसके पश्चात् इन विश्वविद्यालयों ने 1858 में प्रवेश में प्रतिबन्ध हेतु 'स्थानीय परीक्षाओं' (Home examinations) का प्रारम्भ किया। आगे चलकर विद्यालयों में इसने 'सार्वजनिक परीक्षा' (Public examination) का रूप धारण कर लिया। 1858 में कलकत्ता, बम्बई, मद्रास विश्वविद्यालयों के स्थापित हो जाने से यही प्रणाली भारत में भी प्रचलित हो गई। तभी से परीक्षा का शिक्षा में एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना हुआ है। यहाँ तक कि राधाकृष्णन आयोग ने बाध्य होकर इसे इस रूप में व्यक्त किया कि हम पूर्ण रूप से सहमत हैं कि हमें विश्वविद्यालय शिक्षा में केवल एक ही सुधार का सुझाव देना पड़े तो हम उसे परीक्षा में सुधार कहेंगे। यह अतिशयोक्तिपूर्ण निष्कर्ष होगा कि परीक्षा में सुधार से अपने आप शिक्षा में सुधार हो जायेगा। परीक्षा की एक व्यापक योजना में निम्न उद्देश्यों को लक्ष्य बनाना चाहिये—

(a) बाह्य परीक्षा में सुधार

(Improvement in External Examination)

बाह्य परीक्षा के विरुद्ध शोरगुल होते हुए भी शिक्षा से सम्बन्धित बहुत से लोग हमारे विद्यालयों में इसे रखने के पक्ष में हैं। वे मान रहे हैं कि इसका हल उसकी समाप्ति में नहीं वरन् उसके सुधार में है। यह सत्य है कि परीक्षायें हमारे शिक्षण तथा पाठ्यक्रम दोनों पर हावी रहती हैं, पर यह भी सत्य है कि वे हमारी शैक्षिक पद्धति पर एक प्रकार का प्रभाव डालती हैं और उनका एकाएक हटा लेना अशान्ति उत्पन्न कर देगा। यह सभी प्रकार की बाह्य परीक्षाओं के लिये सत्य है, जैसे—लिखित, प्रयोगात्मक एवं मौखिक। साथ ही, जो सुधार प्रचलित लिखित परीक्षाओं के लिये लागू होते हैं वे प्रयोगात्मक तथा मौखिक परीक्षाओं के लिये भी उतने ही उपयुक्त हैं। लिखित परीक्षा में सुधार के अन्तर्गत प्रश्नों का सुधार, प्रश्नपत्र का सुधार, अंकदान की विधि में सुधार, पूर्व परीक्षा प्रबन्ध का सुधार तथा परीक्षोपरान्त परीक्षा फल बनाने में सुधार आदि बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

(b) आन्तरिक जाँच का समावेश

(Introduction of Internal Assessment)

आन्तरिक जाँच के समावेश के पक्ष में सार्वभौमिक प्रवृत्ति देखी जा रही है। स्वेडन ने पहले से ही बाह्य परीक्षा को समाप्त कर रखा है। भारत में पूर्णतया परिवर्तन के लिये अभी जनमत उत्पन्न करना है, परन्तु इसका प्रारम्भ किया जा सकता है। प्रारम्भ में बाह्य परीक्षायें तथा आन्तरिक जाँच दोनों साथ ही साथ चलायी जा सकती हैं और दोनों परीक्षाफलों को अलग-अलग प्रमाणपत्र में बिना मिलाये दिखाया जा सकता है। सिद्धान्ततः आन्तरिक जाँच के विरुद्ध कोई भी व्यक्ति नहीं है, किन्तु सावधानी केवल यह बरतनी है कि परिवर्तन एकाएक न किया जाये और इसके लिये उपयुक्त तैयारी की जाये।

प्रारम्भ में हमें बाह्य परीक्षा तथा आन्तरिक मूल्यांकन के विवेकपूर्ण संयोजन से ही सन्तुष्ट होना चाहिये। आन्तरिक मूल्यांकन का समावेश किये बिना परीक्षा में सुधार के किसी कार्यक्रम की कल्पना नहीं की जा सकती है। समस्या केवल आन्तरिक मूल्यांकन के अंक निर्धारण, कार्यविधि, बाह्य परीक्षा से सम्बन्धित करने की विधि तथा इसे प्रत्येक विद्यालय से तुलना की विधि के निर्णय की है। इसके अतिरिक्त विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सभी पक्षों के मूल्यांकन की आवश्यकता है। चूँकि, लिखित, प्रयोगात्मक तथा मौखिक परीक्षायें इसे पूरा करने में असफल हैं, इसलिये अन्य उपकरणों (Tools) एवं प्रविधियों

Scanned with CamScanner

जैसे—प्रेक्षण, पूर्व घटनाओं से सम्बन्धित अभिलेख (Anecdotal Record), रेटिंग स्केल तथा चैक लिस्ट आदि का प्रयोग करना होगा। यह आन्तरिक मूल्यांकन के स्तर पर सर्वोत्तम सिद्ध हो सकता है।

डा० आर० एच० दवे के अनुसार "यदि बाह्य परीक्षायें वे लक्ष्य हैं जिनकी ओर शैक्षणिक प्रयासों को जुटाया जाता है, तो आन्तरिक परीक्षायें उस लक्ष्य की प्राप्ति के साधन हैं। विद्यालयों को चाहिये कि वे मूल्यांकन के सम्पूर्ण कार्यक्रम में आन्तरिक परीक्षाओं को उचित स्थान देकर उस लक्ष्य को और निकट लाने की कोशिश करें।"

(If External examination was the goal towards which all educational effort was to be directed, Internal assessment was the means to reach the goal. And, the School should try to bring that goal nearer by incorporating the scheme of internal assessment in its total evaluation programme.) — **Report of Evaluation Workshop for Lecturers of Secondary Teachers' Colleges, July 22 to 31, 1964.**

(c) परिणामी परिवर्तन लाना

(Resultant Change)

यह अतिशयोक्ति पूर्ण न होगा कि परीक्षा में सुधार, पाठ्यपुस्तकों तथा पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त शिक्षण की प्रक्रिया तथा अधिगम में भी सुधार साथ-साथ होगा। मूल्यांकन की योजना केवल छात्रों की प्रगति के मापन के साधन हेतु ही नहीं वरन् पाठ्यक्रम के निर्माण तथा शिक्षण पद्धति में अपेक्षित परिवर्तनों की जाँच के लिये भी आवश्यक होगी। मूल्यांकन योजना को पाठ्यक्रम के उद्देश्य की व्याख्या में भी योग देना चाहिये। इसलिये परीक्षा सुधार की कोई भी योजना तब तक सफल नहीं हो सकती जब तक कि इससे हमारी शैक्षिक उद्देश्यों की स्पष्टता का आभास नहीं होता। इसके अतिरिक्त, यह एक सिद्धान्त है कि परीक्षा द्वारा पाठ्यक्रम का आभास होना चाहिये। इसी प्रकार, परम्परागत शिक्षण विधियों में भी सुधार होना चाहिये। पाठ्य पुस्तक तथा अन्य सहायक सामग्रियों को भी उसी के अनुसार नये ढंग से तैयार करने तथा उत्पादन करने की आवश्यकता होगी।

Scanned with CamScanner